Speech of Hon'ble Congress President Smt Sonia Gandhi

Extended CWC Meeting
Saturday, 13th September 2008 [Main Committee Room, Parliament Annexe]

Honourable Prime Minister,
Members of the CWC,
PCC Presidents & CLP Leaders,
Members of the CPP Executive
AICC Office Bearers,
Union Ministers,
Other Colleagues,

I

I would like to begin by congratulating the Prime Minister on your behalf for the historic achievement on the nuclear agreement.

We had to overcome many obstacles.

You will recall that soon after the withdrawal of support by the Left parties, the Prime Minister sought a confidence vote, which we won convincingly. I take this opportunity to thank those party colleagues who worked hard for this result. I also thank our UPA allies and other parties who stood by us.

After this, the government had to negotiate with both the IAEA and the NSG. We were successful here as well, thanks to the Prime Minister's leadership and sustained efforts. The success of the negotiations is a clear vindication of his conviction, which I share, that this agreement fully protects our strategic requirements and is in the best interests of our nation and of our people.

Our country will benefit from the renewed international cooperation that the nuclear agreement will unleash. The world will also gain from our enhanced expertise.

There are economic, technological and political dimensions to this agreement.

In terms of economics, our power generating capacity will increase very substantially.

From a technology perspective, it will propel us to the forefront of research and development.

Politically, the special status of India and its capabilities in the nuclear field have finally been recognized by the world.

Now it is imperative for us to debunk the false propaganda being spread by the BJP, the Left parties and other political opponents.

II

Bihar has been overtaken by a colossal tragedy. Many hundreds have perished. Lakhs of people have lost their homes, their belongings and their livelihoods.

This has caused us deep anguish.

This is not the first time that the people of Bihar have gone through such trauma. Even though this tragedy was compounded by neglect, we must work to find a long-term solution to the perennial problem of floods in this entire region.

I also want to express our grief at the loss of lives and violence in Jammu and Kashmir and in Orissa on account of the political and social disturbances there.

In recent years there has been a marked increase in development in Jammu and Kashmir. The Prime Minister's Reconstruction Package, and programmes and initiatives at the State level, were making a decisive impact. Normalcy had returned, a fact borne by the strong revival in tourism, for instance.

That the situation should have taken such a painful turn is a matter of deep anguish. I hope that the recent settlement on the Amarnath Yatra will lead to a return of a peaceful atmosphere.

Let me categorically state that the people of all regions of Jammu and Kashmir are part of India. If any section feels alienated, it is incumbent upon us to deal with it most sensitively.

I also unequivocally reject the notion of a further division of J&K which has been advocated by the RSS. – There is also no question of pandering to or being "soft" on the separatists.

III

We are also meeting against the backdrop of growing and deliberate communalization in different parts of the country.

What we are witnessing in states like Orissa most recently is a carefully orchestrated ploy by the BJP and its sister organizations to inflame religious prejudices and passions. This has been their strategy all along.

Every time their position is weakened, every time elections are around the corner the BJP, RSS, Bajrang Dal and the VHP launch into a most vicious communal campaign to divide and polarize society, with no regard to loss of lives and livelihoods.

This is a big challenge before us as a party : to expose their mischievous designs and combat their malicious propaganda.

We need to go out and reaffirm the simple truth that unless we work hard to sustain our secular ethos, we jeopardize our social fabric, our social cohesion and, indeed, our country's future.

We give no quarter to those who wage war on our country, be they terrorists or secessionists. But we must also never under-estimate the long-term damage that is caused by communal and parochial forces of any kind that incite hatred willfully and cynically provoke violence. At stake here is the very unity and integrity of India.

It is a basic Constitutional and ideological obligation for us to ensure that each and every citizen is able to lead a life of security and dignity.

Part -2

दो महीने बाद कुछ प्रदेशों में विधान-सभा के चुनाव होंगे और अगले साल संसद् का चुनाव होगा।

इधर कुछ समय से हमने विधान-सभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। इन प्रदेशों के मैं अपने साथियों से लगातार मिल रही हूं।

लोक-सभा चुनाव के लिए भी हम तैयार हो रहे हैं। अनेक समितियां बन चुकी हैं और उन्होंने भी अपना काम शुरू कर दिया है।

आप सब एन्टनी कमेटी की रिपोर्ट और उसकी सिफ़ारिशों के बारे में जानते हैं। मैंने इन्हें गंभीरता से लिया है और एक निश्चित समय में इन्हें लागू करने का कार्यक्रम आपको दे चुकी हूं। मैंने देखा है, कि कुछ काम समय पर पूरे नहीं हुए। अब जल्दी से ज़रूरी क़दम उठाकर इसे पूरा करें।

इस सिलसिले में मैं एक बात टिकटों के बारे में ख़ास तौर से ज़ोर देकर कहना चाहती हूं। अब हम 'Quota System' जारी नहीं रख सकते। उम्मीदवारों के चयन में सिर्फ़ योग्यता को आधार मानना होगा।

इस प्रक्रिया में किसी और प्रभाव का दखल नहीं होना चाहिए। यह वक़्त है, जब हमें कड़ा फ़ैसला लेकर आख़िरी तौर पर इस पुराने तरीक़े को बदलना है। इसके लिए मुझे आप सबका सहयोग चाहिए।

मैंने अलग-अलग समय पर पार्टी के मंचों से एकता और अनुशासन की बात कही है। अगर हम ज़रा सा गिनती करें, तो पता चलेगा कि कितनी बार हम आपसी लड़ाई और एक दूसरे को काटने के चक्कर में चुनाव हारे हैं। क़रीब-क़रीब हम सभी लोग इसके लिए दोषी हैं।

पार्टी की जीत हम सब की जीत है। सामूहिक विजय में व्यक्तियों की विजय भी है। अफ़सोस की बात है, कि चुनाव के समय शायद हम इस सत्य को भूल जाते हैं या फिर जान-बूझकर इसकी उपेक्षा करते हैं। अपने निजी लाभ और महत्वाकांक्षा के लिए हम सभी हारते हैं और पार्टी कमज़ोर होती है। पार्टी सबसे ऊपर है और बहुत बड़ी है। उसमें सबके लिए जगह है। अच्छी बात यह होगी, कि जिन्हें टिकट नहीं मिल सका, हम उनके समेत सभी के हितों का ध्यान रखें।

हमें आपस में ताल-मेल के साथ एक-जुट होकर काम करना है। एकता के साथ आक्रामक होकर अपना अभियान चलाना है। जिन प्रदेशों में हम फिर से जनादेश पाने की उम्मीद कर रहे हैं, वहां सिर्फ़ यह मानकर बैठने और संतुष्ट हो जाने से काम नहीं चलेगा, कि दूसरों की मौजूदा सरकारों से नाराज़ होकर या ऊब कर लोग अपने आप ही हमें वोट दे देंगे। अब चुनावों में कुछ भी अपने आप नहीं होता।

कई ऐसे राष्ट्रीय मुद्दे हैं, जो हम सबकी चिंता का विषय हैं। उनमें से एक मुद्दा मंहगाई है। हमारी सरकार ने Inflation की दर कम करने के लिए सभी संभव उपाय किए हैं। हमने मिट्टी के तेल, खाद जैसी ज़रूरी चीज़ों के दाम नहीं बढ़ने दिए, फिर भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेल, इस्पात और सीमेंट जैसी वस्तुओं के दाम बढ़ने का असर क़ीमतों पर पड़ा है। जब प्रधानमंत्री जी और वित्त मंत्री अपनी बात कहेंगे, तो इस मामले में ज़्यादा विस्तार से आपको बताएंगे। अपने विरोधियों के ग़लत प्रचार का ज़ोर-दार जवाब देने के लिए हमारे पास सभी जानकारी होनी चाहिए।

जहां तक आंतरिक सुरक्षा का सवाल है, यदि हम NDA के समय से आज की तुलना करें, तो हमें किसी भी सूरत में कमज़ोरी दिखाने की ज़रूरत नहीं है। हम मज़बूती के साथ आतंकवाद का मुक़ाबला कर रहे हैं और उसमें कोई कमी नहीं है। आतंकवाद का मुक़ाबला बिना डर, सख़्ती के साथ करना है। हमारे इरादे पर कोई उंगली नहीं उठायी जा सकती। लेकिन इसी के साथ ही आतंकवाद से लड़ने के नाम पर किसी के साथ पक्ष-पात या भेद-भाव नहीं करना है और समाज को बंटने नहीं देना है।

निश्चय ही विधान-सभाओं और लोक-सभा के चुनाव में हमारी UPA सरकार के काम, हमारे चुनाव अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होंगे। हमारी उपलब्धियां व्यापक और महत्वपूर्ण हैं। हमने अपने घोषणा-पत्र में जो वादे किए थे, उनमें से क़रीब-क़रीब सभी पूरे कर दिए हैं।

हमारे ठोस संसदीय कार्य भी अनेक हैं। अगर पिछले चार साल भाजपा ने संसद् ठीक से चलने दी होती, तो इस दिशा में हम और ज़्यादा कारगर होते।

जहां दूसरी पार्टियों की सरकारें हैं, हमें यह सचाई ज़रूर सामने लानी है, कि विकास और जनहित के मामलों में हमने NDA की तरह से राजनीति नहीं की है।

इन प्रदेशों में हमें यह सत्य भी जनता के सामने साफ़-साफ़ रखना है, कि विकास और जन-कल्याण की योजनाओं के लिए जितना पैसा मई दो हज़ार चार के बाद केंद्र से राज्य सरकारों को मिला है, उतना इससे पहले कभी नहीं मिला।

मुझे मालूम है, कि जहां विपक्षी पार्टियों की सरकारें हैं, उन्होंने केंद्र की प्रमुख योजनाओं और कार्यक्रमों को इस तरह पेश करने की कोशिश की है, कि जैसे यह सब उन्हीं ने किया है। इस मामले में भी सचाई को सामने लाने का एक ही तरीक़ा है, कि हमारे कार्यकर्ता पूरी जानकारी के साथ जनता के बीच जायं और एक व्यापक अभियान चलाएं।

हमारे पास चर्चा के लिए ज़्यादा से ज़्यादा चार-पांच घंटे हैं। प्रधानमंत्री जी भी केंद्र सरकार की उपलब्धियों के बारे में बताएंगे और वह हमारे अभियान का एक हिस्सा होगा। आज की बैठक तभी सार्थक होगी, जब हम संक्षेप में, सीधे-सीधे निश्चित मुद्दे उठाकर और ठोस सुझाव देते हुए, इसे एक काम-काजी बैठक बनाएं।

मैं चाहती हूं, कि लंबे भाषणों की जगह आप हमारे सामने मौजूद चुनौतियों और चुनाव की तैयारी के-- दो मुद्दों पर ही अपनी बात कहें। यही इस वक़्त की ज़रूरत है।

We can now begin discussion of the states which will go for elections in two months time - Delhi, Rajasthan, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Mizoram, Jammu & Kashmir.